80

रेखाचितरांम
मक्खणसा

श्रीलाल नथमल जोशी

लेखक–परिचै

श्रीलाल नथमल जोशी रौ जनम 22 फरवरी, 1922 नै बीकानेर में होयौ। माता श्रीमती केसरबाई रै राजस्थानी भासा अर लोक–साहित्य रै गम्भीर ज्ञान रौ वां माथै घणौ प्रभाव पड़ियौ। श्री जोशी राजस्थानी रा चावा–ठावा अर ख्यातनांव साहित्यकार हा। उणां री केई पोथ्यां छप्योड़ी है, जिणां में प्रमुख है– आभै पटकी, धोरां रो धोरी, अेक बीनणी दोय बींद (उपन्यास), सबड़का (रेखाचितरांम), आपणा बापूजी (जीवणी), परण्योड़ी कंवारी, मैंदी कणेर अर गुलाब (कहाणी–संग्रै), नृसिंहगिरि स्तोत्र (कविता)। महताऊ रचनावां सूं राजस्थानी नै बधावौ देवण रै कारण वांनै घणा ई इनाम अर सम्मान मिळ्या। सन् 1959–60 में वांनै बांठिया पुरस्कार मिळ्यौ। 1979 में राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर सूं विसिस्ट साहित्यकार सम्मान मिळ्यौ। 'मैंदी कणेर अर गुलाब' (कहाणी–संग्रै) माथै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रौ पुरस्कार मिळ्यौ। 'हकूमत जनता री' रै राजस्थानी अनुवाद सारू वांनै साहित्य अकादेमी, दिल्ली रौ अनुवाद पुरस्कार मिळ्यौ। जोशी संपादक रै रूप में लूंठी पैठ राखता। सन् 1983 में राजस्थान सरकार कानी सूं 'हिवड़ै रौ उजास' रौ संपादन करियौ। सन् 1991 में 'युग–दर्शन' रौ संपादन करियौ।

पाठ–परिचै

मक्खणसा रेखाचितरांम वांरी पोथी 'सबड़का' सूं लिरीज्यौ है। मक्खणसा मिनखां जैड़ा मिनख हुवता थकां ई सोळवौं सोनौ है। भलांई वै काळा है, कोजा है, डरपोक है, घणखाऊ है। पण चोर–चार कोनी। रावळा मांय उणां री सीधी 'एन्ट्री' है। सोनौ भलांई उणां रै पगां में पड़्यौ हुवै। उणनै वै धूड़ बराबर गिणता। इण सगळी विसेसतावां सूं मंडित है– 'मक्खणसा' रौ औ रेखाचित्राम, जकौ घणौ अंगेजण जोग है।

मक्खणसा

मक्खणसा री ऊमर अबार कोई इकताळीस–बयांळीस हुवैली, पण बातां हाल तांई टाबरां वाळी करै। रंग तौ रामजी रै घर सूं काळौ ई पांती आयौ, पण डील रा पूरा है– ऊंठ सूं थोड़–साक नीचा रैवै। पगरखी रौ अजूनौ कर्‌योड़ौ ई समझौ। ब्याव–सावै में माथै ऊपर बोदौ–सोदौ पेचौ बंधाय लेसी, कोट नवौ पैरसी, पण कोट रै मांय गंजी का कमीज को हुवैनी। धोती पैरसी धुआऊ, पण बांधै इसी ढीली ढबळ जाणै अबार खुली, घड़ी नै खुली। मनै तौ घणी बार औ डर लागै कै कणैई रस्तै बैवतै मक्खणसा री धोती धरती पड़ जासी अर मक्खणसा नागा हो जासी। पण हाल तांई तौ, माईतां रै भाग सूं, धोती पड़ती–पड़ती बंचै है।

गाभा पैर–पैराय'र आप असली पन्ना रौ कंठौ अर खरै मोत्यां री पौतरी पैरै। अै गैणा है तौ मक्खणसा रा आपरा, पण दीसै है मांग'र लायोड़ा।

मक्खणसा रै पट्टा छंटावण री तौ सौगन ई है, पण बिना अेढै संवार भी करावै नईं। अेक रै लारै भद्दर हुवै जिकै रा फेर कोई दूसरौ मरै तद भद्दर सूं पाछा भद्दर ई हुवै। जे कदास लागती–पागती में कोई नईं मरै अर मक्खणसा देखै कै अबै तौ माथै में जट कोजी बधगी, अर खाज खातर दाड़ी घड़ी–घड़ी कुचरणी पड़ै, तौ आप केई डागै, बाएती, माळी, मोदी, हरेक रै लारै भद्दर हो जावै, कारण, भद्दर री संवार करायां मोफत में चन्नण घसीजै, जट उतराई रौ कोडी अेक लागै नईं। पण घणी–सी'क वार केस अर दाड़ी बध्योड़ा ई रैवै। गैणा पैर–पैराय'र आप उभराणा पगां ई निकळसी। पग पावड़ां जिसा– बारै ई मास ब्याऊ फाट्योड़ी हुवै ज्यूं चीराळी–चीराळी रैवै।

मक्खणसा री खुराक

मक्खणसा रुपियै ऊपर जीमै, रुपियै ऊपर कांई जीमै, बस फूल ई सूंघै, घरवाळा सगळा जीम्यां पछै आप जीमण नै बैठै जिको रोट्यां री ओडी खाली कर देवै। बाबोजी जीम्यां पछै ठिया रैवै। जीमण री चाल मसीन रै बराबर तेज– डावै हाथ सूं फलको लेवै जित्तै जीवणै हाथ सूं गब्बौ कर जावै। पण घरै मक्खणसा धापै नईं। जद कोई जीमण–जूठण हुवै, तद ई इणां रै पेट रा सळ निकळै। जीमण मं ई घणा आदम्यां रौ बैधौ हुवै तौ धापै। पांच–सात मिनख नूंत्योड़ा हुवै अर जे मक्खण जीमण नै पैली पूग जावै, तौ का तौ रसोई दूसर बणै अर का पछै आवै जिका पाछा भूखा घरै जावै।

मक्खणसा जद जीमण जावै तौ साथै अैंढौ भी ले जावै। टाबरां री छोटी–सीक गोथळ्यां तौ झट भरीज जावै, पण मक्खणसा रै कूवै रौ हाल तळौ ई ढकीजै नईं, इण कारण बै देखै टाबर भूखा है अर उणां नै ठोलां सूं मार–मार'र जीमावै। ठोलां रै डर सूं घर रा टाबर भी इणां रै सागै जीमण रै नांव सूं कांपै।

अेक दिन मक्खणसा अेक छोटै बैधै में जीमण नै गया। सेठाणी पैली च्यार लाडू पुरस्या, दूजी बार में दो अर तीजी बार में अेक लाडू पुरस'र पूड़्यां रौ पूछण लागगी। मक्खणसा देख्यौ, आज तौ काम कठन दीसै है, इयां टोपै–टोपै सूं कणै घड़ौ भरीजसी? सेठाणी पसवाड़ कर निकळी अर मक्खणसा कैय दियौ, "देय देवौ आठ लाडू!" आठ सुणतां ई सेठाणी रौ काळजौ तौ फड़क–फडक करण लागग्यौ, पण जीमणियौ मांगै ज्यूं पुरसणौ तौ पड़ै ई। मक्खणसा इयां आठ–छव, आठ–छव कर–करनै नीठ पेट भरयौ।

अेक दिन आप बेढबीं पूड़्यां जीम'र आया। म्हैं पूछ्यौ– "कित्ती'क पूड़्यां खायी आज?"

"कांई खायी, जीव सो'रौ कोनी जिकौ भायी कोनी आज तौ।"

"तौ ई कांई तौ खायी हुसी?"

"खायी कांई, अै ई पचास रै मांय–मांय खायी हुसी।"

मक्खणसा रै साब रै बेटै रौ ब्याव हुयौ, मक्खणसा नै भी जान लेयग्या। साब मक्खणसा नै डेरै में राखै, जीमण नै साथै नईं लेजावै, पण मक्खणसा खातर दस आदम्यां रौ कांसौ पुरसाय'र मंगाय लेवै। अेक दिन मांढै रौ आदमी डेरै में आय'र साब सूं बोल्यौ– "कसूर माफ हुवै तौ अरदास करूं।"

"फरमावौ सा, कांई हुकम है।" साब कैयौ।

मांढी संकतौ–संकतौ बोल्यौ– "डेरै में लारै आदमी तौ अेक रैवै अर आप कांसौ मंगावौ दस रौ, बाकी रा नव जणां नै तौ

देख्या ई कोनी।

साब बोल्यौ– "अछ्या, आज आप अेक ई कांसौ ना भेज्या।"

"औ हो, आप तौ रीस करली।" मांढी गिड़गिड़ायौ।

साब कैयौ– "नईं, नईं, रीस कोनी, आप बेफिकर रैवौ।"

मक्खणसा नै साब आज जीमण नै साथै चालण रौ कैय दियौ। मक्खणसा नसा–पता लेय'र त्यार हुयग्या। सगळा जीमण नै गया। मक्खणसा ई गया। और लोग तौ थोड़ी ताळ में जीम–जीम'र उठग्या, पण मक्खणसा हाल आधा ई धाप्या नईं। जामफळ वाळौ पूछै– "क्यूं, दो देय दूं?" मक्खणसा कैवै– "बस, अेक–दो सूं बेसी ना दिया, हूं धाप्योड़ौ हूं।" लाडू वाळौ पूछै– "लाडू?" मक्खणसा कैवै– "थांरौ तौ मन राखणौ पड़सी, देय दो च्यार लाडू।"

जद मक्खणसा भांत–भांत रा खटका देखाळ्या, तौ कानी–मानी सगळा घेरौ घालनै ऊभग्या। पैली वाळौ मांडी मक्खणसा रै साब कनै आयौ, बोल्यौ– "मक्खणसा, आं खातर तौ आपनै बीस जणां रौ कांसौ मंगावणौ चाईजतौ हौ, दस रौ मंगाय'र तौ आप लाई बामण रौ फालतू पेट रौक्यौ।

तीन सेर मीठै री होड

अेक मजूर केई सूं सवा सेर मीठौ खावण री होड करी। सवा सेर मीठौ सामलै सूं खायीज्यौ नईं जद दूणा पईसा चिपग्या। मजूर रौ हाव बधग्यौ, मक्खणसा सूं भिड़ग्यौ– दो सेर मीठै री होड में! लोकां समझायौ– "अरे, दो सेर तौ मक्खणसा उडाय जासी।" मजूर डरग्यौ। खैंचाताणी कर–कराय'र तीन सेर माथै होड पूगी– खाली मीठौ, साथै चरकौ नईं। जे मक्खणसा जीतै तौ दो रुपिया इनाम; जे हारै, तौ मिठाई रै मोल सूं दूणौ चटीड़!

खीरमोवन–जामफळ रौ अेक–अेक ठूंगौ आयग्यौ अर मक्खणसा हाथ साफ करणौ सरू कर्‌यौ। दो सेर उडायौ जित्तै तौ आपनै डकार ई को आयी नीं। पण, मक्खणसा मोथा जीमाकिया है, जीमण री अटकळ जाणै नईं। दो सेर मीठौ खायौ जित्तै अढाई–तीन सेर पाणी पेट में ऊंधाय लियौ जिकै सूं पेट तणीज'र नगारौ हुवै ज्यूं हुयग्यौ। अबै आप घबराया– "अरे! जीत्यां सूं तौ आसी खाली दो छिलका, अर जे हारग्यौ तौ पंदरै कळदार खुस जासी।" मीठै रौ भाव उण दिनां अढाई रुपियां सेर रौ हौ।

पण हाल तांई मक्खणसा अेड्यां रै ताण बैठ्या जीमता हा। अबै पालखी मारणी याद आयी, कोट रा बटण खोल्या, अर बीं दिन संजोग सूं पजामौ पैर्‌योड़ौ हौ, जिणरौ नाड़ौ ढीलौ कर्‌यौ। अबै मक्खणसा फेर थोड़ा ससवां हुयग्या। मीठै रौ ठूंगौ मक्खणसा सूं आघौ मेल्योड़ौ हौ, जे सगळौ मीठौ दीखतौ रैवै तौ छाती चढ जावै। मक्खणसा पूछ्यो– "अबै कित्तो'क रैयौ है?" मक्खणसा मांगौ तौ न्हांख दियौ, पण दिलासा दिरावण सारू म्हैं कैयौ– "बाजी मारली, थोड़ी ई है अबै तौ।" अर म्हैं फेर च्यार खीरमोवन पुरस दिया।

होड करण वाळौ मजूर घड़ी–घड़ी कैवै– "देख, उल्टी ना कर दियै। जे करदी, तौ पईसा चिप जावैला।" मक्खणसा नै उल्टी करावण सारू ई मजूर घड़ी–घड़ी उल्टी रौ नांव लेंवतौ हौ। मक्खणसा रौ हाथ तौ बराबर चालै, पण मांय सूं जीव घबरावै। उबकी आंवती–आंवती रैय जावै। अेक बार तौ थोड़ी–सीक गुचळकी आय ई गयी, पण मक्खणसा री बध्योड़ी दाढ़ी काम देयगी। मूंढै आडौ हाथ देय'र मक्खणसा गुचळकी नै दाढ़ी में रमाय दी। मजूर हाका तौ कर्‌या पण मक्खणसा ऊपर रौ ऊपर उडाय दियौ।

दो सेर खायौ जित्तै तौ बूंटी रा नसा सागीड़ा ऊग्या, पण अबै नकसा फीका पड़ण लागग्या। पसीनै रा बा'ळा बैवै, डील झोबाझोब होयग्यौ। मीठौ खांवतै–खांवतै कित्ती ई बार मक्खणसा हाथ में पाणी लियौ कै फेर तौ

कोई सूं मरतौ–जींवतौ होड करूं नईं, पण तौ ई मजूर नै कैवै– "थारै लाई रै मोफत में नुकसाण हुवणौ लिख्योड़ौ हो जिको हुयग्यौ, अर रैयौ–खेयौ फेर हुय जासी। अबै तौ मिठाई थोड़ी–सी'क रैयी हुसी।" आ बात कैंवता मक्खणसा छाकटा हुवै ज्यूं को दीसै नीं, पण इयां लागै कै साच्याणी आं रै मन में मजूर रै खातर हमदरदी है।

आखर मक्खणसा इत्ता छिकग्या कै टाबर नै ठगावै ज्यूं ठगा–ठगा'र मीठौ खुवावणौ पड़्यौ– अछ्या, अबै आठ रैया है, अबै छव रैया है...। तौ ई फेर, सूरज बापजी री साख भराय'र मक्खणसा हाथ में पाणी लियौ कै फेर तौ केई सूं भोळै भूल'र ई होड नईं करूं। इयां करतां–करतां मक्खणसा तीन सेर मीठौ मांय मेलग्या। मजूर रौ मूंडौ फलकौ हुवै ज्यूं हुयग्यौ, पण मरतै आक चाब्यौ– ठूंगां में रस बंच्योड़ौ है जिकौ भी तीन सेर में सामल है, पीवणौ पड़सी।" तमासौ देखणिया कैयौ– "रस री तौ होड को ही नीं।" पण मक्खणसा देख्यौ कै रस रै कारण गुड़ गोबर हुवै है, ले ठूंगौ अर लिया सबड़का– "हे... लै, औ रस!" इयां कैय'र सगळौ रस सबड़ग्या।

मजूर दो रुपिया इनाम देय'र बोलौ–बोलौ टुरग्यौ।

रंग–ढंग

मक्खणसा नै पोगाय'र भलांई कोई उणां रा घर–जायदाद आपरै नांव करवायलौ। चलाक लूंकड़ी कागलै नै धुरु बणाय'र ज्यूं रोटी लेयगी उणी तरै मक्खणसा कनै कित्ती ई लूंकड़्यां ढूकै, अर सगळ्यां आपरै भाग सारू कांई–न–कांई पावै, खाली नईं जावै।

अेक डाकोत कैयौ– "मक्खणसा! थांरै आगै डागा, रामपुरिया भी पाणी भरै। थांरी पगथळी री ई होड नईं कर सकै। धरम–पुन में थांरै जिसौ जीव राजा–म्हाराजावां में ई कोनी।"

"अरे वाह रे डाकोत! तनै मक्खणसा नूईं री नूईं रजाई काढ'र देयदी। आप सियाळै में गूदड़ौ आधौ बिछायौ अर आधौ ओढ्यौ।

मक्खणसा रै घर में धान–चून जोवौ तौ ऊंदरा थड़ी करता लाधसी। बऊ जे धान लावण रौ कैसी तौ दस बार कैयां भी सुणाई हुवै नईं; पण जे आप धान लांवता हुसी अर मारग में बडाई करणियौ सांम्ही मोडौ मिल जासी तौ आधौ–पड़धौ धान दड़ाछंट बांट देसी।

आखी दुनिया मक्खणसा री दातारी रौ डंकौ पीटै, पण घरवाळा कैवै– "तूं दादियै बायरो है, थारै में कोडी रा ई सऊर कोनी, बळी थारी दातारी भूंडी लागै!" अै बोल मक्खणसा सूं झलै पण कांकर झलै जदकै सगळा लोग बांरी बडाई करता को धापै नीं। इण कारण घरवाळां सूं मक्खणसा री कमती बणै। जे कोई घरवाळौ चोखी सीख देसी तौ वा चोपड़ियै घड़ै री छांट दांई तिसळ जासी। इत्तै सूं लारौ नईं छूटै। मक्खणसा बड़बड़ाट करता घर सूं निकळसी, जिकै रा थोड़–सी'क दूर जांवतै ई जोर–जोर सूं गाळ्यां काढण लाग जासी। जे कोई चासा पीवणियौ हंकारा देवण लाग जासी, तौ आप भूं–भूं रोवण लाग जासी अर साच्याणी आंसू लासी।

आप नौकरी करै– जमादारी। अेक रात आपरौ पौरौ कोयलां कांनी हौ। तीन माणस आया, दो तौ आपनै बातां में लगाय लिया अर तीसरौ कोयला पार करतौ रैयौ। मक्खणसा इसी जमादारी करै। पण फेर भी आपनै रात री डिपटी में राखणा पड़ै। जे दिन री डिपटी में राखै तौ लोग इणां रौ उदबुदौ रंगढंग देख'र "हाऊड़ौ! हाऊड़ौ!!" हाका करण लाग जावै। मक्खणसा रा तमासा देखण सारू मोकळा माणस भेळा हुय जावै। इण तरै मेळौ मंडायोड़ौ अफसरां नै पोसावै नईं अर मक्खणसा री रोटी भी खोसणी चावै नईं। इण कारण रात री डिपटी देय'र मक्खणसा नै धिकावै।

जे कदास मक्खणसा दिन रा कारखानै पासी आय जावै अर मजूर आपस में सल्ला कर'र, 'हाऊड़ौ–हाऊड़ौ' नईं कैवै, तौ भी आपनै सुवावै नईं। मजूरां नै चुप देख'र मक्खणसा अेक दिन कैय ई दियौ– "आज सगळा अणबोल हौ, जाणै माईत मरग्या हुवै।

लैण–दैण

मक्खणसा रुपिया बौरै, बौरै कांई, दुनिया नै लूंटै! आनो रुपियो ब्याज कमावै! पण इणां रा सैंस्कार पोचू है– ब्याज तौ इणां नै देवै ई कुण, मूळ पाछौ चूकायदै इसौ भलौ माणसक भी इणां रै ढूकै नईं। पण है मक्खणसा धनगैला। अबार ई थे जे अेक आनै रुपियै रौ लोभ देवौ, तौ झट थांनै रुपिया उधार देय देसी। राम दिरावै तौ पाछा दिया, नईं तौ चकन्दा कर जाया। मक्खणसा उंतावळा बोल'र तगादौ भी नईं करै अर धीरै कैयां रुपिया पाछा देय देवै इसा मिनख पड़्या कठै है?

आप हैंसाब पाई–पाई रौ मूंढै राखै, चूक छदाम री री करै नईं। जे मक्खणसा खुद केई कनै सूं रुपियौ–टक्कौ उधार लेसी, तौ पाछौ तौ देय देसी, पण देसी रुळा–रुळा'र।

सागीड़ा तिराक

खेजड़ै री ऊंची डाळ सूं, आंख्यां मींच'र आप तळाव में गंठौ बीड़ै, सागीड़ौ पाणी उछाळै। आप ऊभी तिरणी तिरै, मुड़दा–तिरणी तिरै, तळाव रा घूम–घूम'र चक्कर काटै। पण मक्खणसा न्हायां पछै पैरण सारू साथै दूजा गाभा नईं लावै। सागी आला पूर पैरै। घरै जावै जणै दीसै इसा जाणै न्यारै (मसाणां) सूं पधारया हुवै, पण मक्खणसा नै जाणै जिका तौ समझ जावै कै आप तळाव सूं पधारया है।

तगदीर सिकन्दर

का तौ मक्खणसा घर में पाणी लावै ई नईं, अर जद लावण लागसी तौ कूंडी री पट्यां सूं टकराय देसी। माटा–झरबा, लोटा–कळसिया सगळा भर देसी। बीजा माणस तौ टूंटी कनै ऊभा बारी नै अडीकता रैवै अर मक्खणसा आंवतै ई जचै जिकी लुगाई नै झाल बूकियौ अर छेड़ै कर देवै अर आपरौ घड़ौ भर लेवै। घणी–सी'क लुगायां तौ खिलखिला'र हंसण लाग जावै, पण जे कोई नवै नाक आळी गाळ्यां काढण ढूक जावै तौ मक्खणसा नै डर को लागै नीं, वै खुद आपरौ रेडियौ चालू कर देवै।

मक्खणसा लूंबौ लाया

मक्खणसा टाबर हा जद री बात है। इणां रै सेठां रै घर में कोई रौ ब्याव हौ। घर आगै जळसौ होयौ, भगतण्यां नाची। मक्खणसा सदेई गावणौ सुणन नै जावता। अेक दिन उणां री मां भी गयी। सेठां मां नै पूछ्यौ– "तनै किसी गावणै में ठाह पड़ै है जिकौ आयी है सुणन नै?" मां इयां ई नस सूं हंकारै रौ लटकौ कर दियौ। सेठां पूछ्यौ– "आ कांई गावै है बताव?" हाकै रै कारण मां नै सुणीज्यौ– "कित्ता जणा करै है गावणौ?" मां जीवणै हाथ री पांचूं आंगळ्यां देखाळदी– "भई पांच जणा है– अेक तौ गावण वाळी, दूजौ तबलै वाळौ, तीजौ पेटी वाळौ, चौथौ सारंगी वाळौ अर पांचवीं गावण वाळी री मां।" उण बगत भगतण पंचम सुर में अलाप लेवती ही। माजी री पांच आंगळ्यां देख'र सेठां सोच्यौ– डोकरी समझै दीसै। सेठ राजी हुया, मुनीमजी कनै सूं झट पांच रुपियां रौ नोट इनाम में दिराय दियौ।

माजी तौ रुपिया लेय'र मैफिल रै अधबिच में ई घरै टुरग्या। जद छोटो–सो'क मक्खणियौ घरै गयौ तौ मां झड़फड़ायौ– "देख, तूं तौ नित–हमेस रात री अेक–अेक दो–दो बजाय'र आवै, पण ठोक्यै भाग रैवै, हूं तौ आज ई गयी जिकै में रुपिया पांच इनाम रा लेय आयी।"

मक्खणसा सोच्यौ– काल बात। आप ई सेठां री जाजम ऊपर बैठ'र लोगां रै देखादेख नस रा लटका करण लागग्या। सेठां री निजर

बठीनै पड़ी, पूछ्यौ– ''अरे मक्खणिया, इत्ता लटका करै, तूं किसौ समझै है, बताव आ कांई गावै है?'' मक्खणसा बोल्या ई– ''क्यूं, समझूं क्यूं कोनी, मनै तौ सगळी ठाह पड़ै है। आ गावै है...'' इयां कैय'र दोनूं हाथां री दसूं आंगळ्यां दस रुपिया लेवण खातर सेठां रै सांम्ही कर दी। सेठां रौ सभाव कीं अकरौ हौ। नौकर नै हुकम दियौ– ''ईं मक्खणियै नै बांध'र घोड़ां रै ठाण कनै गुड़काय दै। रोज–रोज अठै जाजम ऊपर बराबर आय'र बैठ जावै अर गैला लटका करबो करै, सऊर कोनी धूड़ खावण रौ ई।

मक्खणसा थोड़ी ताळ ठाण री हवा खाय'र घरै आया। मन में विचार कर्‌यौ– आ भगतणकी नईं आंवती तौ ना तौ गावणौ हुंवतौ, ना हूं लटका करतौ अर ना ठाण कनै गुड़कायीजतौ। काल ईं रांड रौ कोई लूंबौ–झूंबौ तोड़'र लाऊं जणै जीव सो'रौ हुवै।

सियाळै री रात ही। मक्खणसा भगतण रै पसवाड़लै पाटै माथै चदरौ छीदौ कर'र बैठग्या– भई आ इत्ती नाचै–कूदै है, कणै–न–कणै तौ कोई लूंबौ पड़ ई जासी।

भगतण नै जुखम इत्ती जोरदार कै रुमाल आलौ गार हुयग्यौ, पण हाल तांई नाक सूं पाणी पड़ै। मौकौ देख'र भगतण मक्खणसा रै चदरै माथै टेचौ न्हांख दियौ जिकौ बीजळी री सैचनण रोसणी में पळपळाट करतौ मक्खणसा नै लूंबौ ई लागयौ। झट कर चदरियौ भेळौ अर मक्खणसा दिया ठोका। मां घर रौ बारणौ खोल्यौ कोनी जित्तै तौ मक्खणसा कैय ई दियौ– ''तूं तौ लायी काल पांच रुपिया, म्हैं लायौ हूं लूंबौ!'' घर में दीयौ जगायोड़ौ तौ हो नीं। डोकरी चदरै में लूंबौ जोवण लागी तौ अंधारै में हाथ भरीजग्यौ। मक्खणसा तौ देख्यौ मनै मिलसी सबासी, पण पांती आयी गाळ्यां अर ठोलै रौ भचीड़।

नसैबाज मक्खणसा

नईं जणै तौ मक्खणसा नै दुनिया भर रौ सोच रैवै। कणैई रोवै कणैई हंसै, पण बूंटी रौ लुगदौ चबायां पछै आपनै ईं दुनिया री सुध–बुध नईं रैवै। मूंडौ सूज'र तूंबौ हुवै ज्यूं हुय जावै, आंख्यां रा पट गैळीज जावै, चाल में इसी मस्ती आवै कै पांच मिंट सूं पांवडौ धरै। पग उठावतै इसी ठाह पड़ै जाणै पगां रै जेवड़ी बंध्योड़ी है।

पण है अबार मस्ती री बेळा– थे गाळ्यां काढ दो, घुद्दा लगाय दो, मक्खणसा रै रीस नैड़ी ई को अड़ै नीं। आप बराबर मुळकता रैसी। हां, आ जरूर है कै थे जे कैसौ– ''कानां रै लूंगां री बिड़ग्यां ढीली हुयगी'', तौ आप लूंग झट संभाळ लेसी। जे कनै ऊभा दस आदमी बारी–बारी दस बार कैसी, तौ आप दस बार संभाळ लेसी। जे अेक आदमी दस बार कैसी, तौ ई पांच–सात बार तौ संभाळ ई लेसी।

जद इयां मस्त हाथी दांई मक्खणसा झूम–झूम'र चालै, तौ गळ्यां रा कुत्ता भुसण लाग जावै। पण हाथी लारै कुत्ता घणा ई भुसै। फरक इत्तौ है कै साच्याणी हाथी रै कुत्ता बटकी को भरैनी अर मक्खणसा रै निरी बार घबूर काढ लेवै। पैलड़ै रौ डंक आछौ हुवै जित्तै दूजौ त्यार! अेक दिन तौ सागी कुत्तौ मक्खणसा नै अेक गळी में आंवतै अर जांवतै दो बार खायग्यौ।

गण कच्चौ

जे कोई कच्ची छाती वाळौ अंधारै में मक्खणसा नै अेकाअेक देखलै तौ काळजौ गिरै छोडदै, पण अचम्बौ तौ औ है कै मक्खणसा रौ आपरौ गण कच्चौ है। जद कदैई रात रा सूनवाड़ मांय सूं अेकलौ जावणौ पड़ै तौ कोई न कोई कैर–बोरटी–खेजड़ै–जाळ में पक्कायत कोई न कोई भूत–भूतणी दीख जावै। मक्खणसा कैवै– ''जे दूसरै आदमी नै दीख जावै तौ छाती फाट'र मर जावै। औ तौ म्हैं हौ जणै अैसी दाकल करदी जिणसूं भूत रौ बस को चाल्यौ नीं।'' कदै–कदैई मक्खणसा

नै दो–तीन भूत भेळा ई दीस जावै, पण मक्खणसा री दाकल देवण री हीमत नईं पड़ै अर इणां नै ताव चढ जावै, दो–च्यार दिन घर में सूता रैवै। फेर भी लोग इणां री भूत–पलीत री बात रौ भरोसौ नईं करै।

अेक बार सिंझ्या रा आप तळाव सूं न्हाय'र घरै आवता हा। सागै अेक म्हाराज दूध रौ गूणियौ लियां चालता हा। म्हाराज भूत–खईस डाकण–स्यारी रा झाड़ा तौ बतावता हा, पण मक्खणसा नै साच्याणी भूत दीसै; आ बात नईं मानता।

आज मक्खणसा नै साच्याणी भूत दीस्यौ! मक्खणसा भाग्या, इसा भाग्या जाणै कोई पइया लाग्योड़ा हुवै। म्हाराज रै माथै में इणरौ अरथ रत्ती भर समझ में नईं आयौ। थोड़ी–सी'क ताळ नै रोही रौ चक्कर काट'र मक्खणसा म्हाराज रै कनै कर सैंपूर चाल सूं निकळ्या। म्हाराज देख्यौ– आज तौ साच्याणी दाळ में काळौ है। म्हाराज थोड़ा आगै गया, जित्तै मक्खणसा फेर दड़बड़–दड़बड़ करता, सागीड़ा हांफ्योड़ा, पसवाड़ कर निकळ्या। म्हाराज सोच्यौ– आज तौ मक्खणसा में साच्याणी भूत बड़ग्यौ दीसै अर म्हारै कनै दूध है, इण कारण म्हारै बार–बार चक्कर काटै है, जे कदास म्हैं भूत री फेट में आयग्यौ तौ औ दूध कीं रै आडौ आसी?

झाड़ागर म्हाराज च्यार सेर दूध धरती माता नै पाय दियौ। मक्खणसा नै तीन दिन ताव आयौ, म्हाराज नै पांच दिन!

गवैया मक्खणसा अंगरेजी समझै

मक्खणसा गवैया चोखा है, पण ज्यूं कैयौ कुंभार गधै नईं चढै, उणी तरै मक्खणसा भी कैयां सूं गावै नईं। मक्खणसा रौ कंठ मीठौ है, राग री मोड़ भी जाणै, पण गावै है 'रबड़ छंद'। रबड़ छंद में भी आप तुकान्त रौ ध्यान राखै। नमूनै खातर–

''भजन बिना रे, बीती जाती है उमरिया।
नित नहीं नेम नहीं, सन्तों से प्रेम नहीं,
सिर पर धरी रे
मूरख तेनै क्यों,
युवा उमर गमाई,
उर्जन, नर्जन, तर्जन,
अब क्यों नीं पटकै
.....पाप की गठरिया।''

जिणमें केई सबद फालतू कैय'र लारै जांवतौ 'उमरिया' री तुक 'गठरिया' सूं मिलाय देसी।

कारखानै रै साब लोगां रा बंगलां कनै कर निकळै जद मक्खणसा पैली सूं ई गावणौ सरू कर देवै। रस्तै में मिलै जिकै नै आप कैवै– ''म्हारै गावणै सूं आज साब री मैम बौत राजी हुयी।''

''थांनै कांई ठाह?''

''म्हारै सामनै ई तौ मैम बडाई करी साब रै आगै म्हारी।''

''थे किसा अंगरेजी समझौ हौ, मैम तौ अंगरेजी में कैयौ हुसी नीं।''

''अंगरेजी समझूं क्यूं कोनी, मैम कैयौ– देखो गुट मैन, नो मिस्टेक, म्हाराज इस फ्रन्ट बिचारा कैसा अच्छा गाता है।''

''आ तौ सफा खोटी अंगरेजी है।''

''म्हैं कोई अंगरेजी पढ्योड़ौ थोड़ौ ई हूं। इत्तौ तौ हिरदै री उकत सूं समझग्यौ। पण म्हारौ गावणौ जे मैम रै दाय नईं आवतौ, तौ म्हारै सामनै देख'र वा हंसती कांय वास्तै?''

सोळवौं सोनौ

मक्खणसा काळा है, कोजा है, डरपोक है, घणखाऊ है, पण चोर–जार कोनी, इण कारण बडा–बडा रावळा री जिनानी डोढ्यां जिणां में चिड़ी रौ जायौ भी नईं बड़ सकै, मक्खणसा खातर खुल्या है। बठै जे सोनौ ई पगां में पड़्यौ हुसी तौ आप उणनै धूड़ बराबर समझसी। पारकी चीज नै पारकी अर आपरी नै आपरी समझै, इण कारण मक्खणसा मक्खणणा हुवतां थकां भी सोळवौं सोनौ है।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

जीमण=भोजन। उभराणा पगां=अळवाणा पग, बिना पगरखी। पुरसणौ=परोसणौ। रीस=किरोध, झाळ। मोफत=फोगट में, बिना मोल चुकायां। झोबाझोब=पसीनै–पसीनै पोगाय'र=राजी कर'र। उदबुदौ=अजब–गजब रौ। सागीड़ा=सांतरा, सांगोपांग। तिरणी=तिरणौ। बडाई=सरावरा, प्रसंसा। पगथळी=पगां रै हेठलौ भाग। भूंडी=बुरी, माड़ी। पसवाड़=अेक कांनी, पसवाड़ै। घणखाऊ=घणौ खावणियौ। उतावळा=खतावळा, जल्दबाजी। लारौ=पीछौ। खैंचाताणी=रस्साकसी, खींचताण। टैंचौ=नाक सिणक'र सेडौ न्हाख दियौ। गण=प्रक्रति। गब्बौ=खावणौ, बेगौ–बेगौ खावणौ। धुरू=मूर्ख। हाऊड़ौ=डरावण वाळौ सबद। चासा=ठिठोळी। अैंढौ=संगी–साथी।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. मक्खणसा री उमर कित्ती ही–
   (अ) पचास–इक्यावन (ब) इकताळीस–बयांळीस
   (स) पैंताळीस–छयांळीस (द) साठ–इकसठ
   ( )
2. मक्खणसा किणरै ब्याव में गया हा–
   (अ) साब रै भाई (ब) साब रै भतीजै
   (स) साब रै बेटै (द) साब रै भाणजै
   ( )
3. मजूर अर मक्खणसा रै बिच्चै कित्ता रुपियां री सरत लागी?
   (अ) दस रिपिया (ब) इक्कीस रिपिया
   (स) चार रिपिया (द) दो रिपिया
   ( )
4. अेक डाकोत कैयौ– मक्खणसा, थांरै आगै सै पाणी भरै। अै कुण पाणी भरै?
   (अ) डागा, रामपुरिया (ब) कुंभार
   (स) साब (द) भगतण
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. मक्खणसा, मक्खणसा हुवता थकां ई कांई है?
2. सेठ माजी नै कित्ता रौ नोट इनाम मांय दियौ?
3. मक्खणसा रै गावणै सूं कुण खुस व्ही?
4. मक्खणसा अर मजूर रै बिच्चै कुणसी मिठाई री सरत लागी?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. इण रेखाचितरांम में मक्खणसा रौ कांई संदेस है?
2. मक्खणसा रौ चरित्र–चित्रण आपरै सबदां मांय मांडौ।

3. मक्खणसा री खुराक कांई ही, आप खुलासैवार लिखौ।
4. अरे खायां सूं कांई हुवै, हजम होवणौ चाईजै।'' आ ओळी कुण किणरै सारू कैयी?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. मक्खणसा रै जीवण सूं आपनै कांई सीख मिळै?
2. ''मक्खणसा रौ गण कच्चौ हौ।'' इण बात नै उदाहरण देय'र समझावौ।
3. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) मक्खणसा रुपियै ऊपर जीमै, रुपियै ऊपर कांई जीमै, बस फूल ई सूंघै, घरवाळा सगळा जीम्यां पछै आप जीमण नै बैठै जिको रोट्यां री ओडी खाली कर देवै। बाबोजी जीम्यां पछै ठिया रैवै। जीमण री चाल मसीन रै बराबर तेज– डावै हाथ सूं फलको लेवै जित्तै जीवणै हाथ सूं गब्बौ कर जावै।

(ब) मक्खणसा गवैया चोखा है, पण ज्यूं कैयौ कुंभार गधै नईं चढै, उणी तरै मक्खणसा भी कैयां सूं गावै नईं। मक्खणसा रौ कंठ मीठौ है, राग री मोड़ भी जाणै, पण गावै है 'रबड़ छंद'। रबड़ छंद में भी आप तुकान्त रौ ध्यान राखै।